मुण्डन संस्कार के नियम

१ बालक जब एक या तीन वर्ष का हो जावे तब सुद पक्ष में मुण्डन संस्कार मंदिर में हो सकता है। दो वर्ष के बालक का मुण्डन संस्कार नहीं होता है। आसोज के नवरात्री में मुण्डन संस्कार अति उत्तम है ।

२ सवापाव या सवा किलो गेहूं के बाट की लापसी गुड की बनवाई जाती है। जिसको ९ हांतियां बनाकर माताजी को चढावें ।

३ बालक के ननिहाल से कोजलिया एवं नये वस्त्र टोपी आदि जो आवे उन्हें बालक को मंदिर में बालों का मुण्डन करवा कर, स्नान करा कर पहनावे। बालक के मुण्डित मस्तिष्क पर केसर या कुंमकुंम का स्वास्तिक बनवायें । कोजलिए पर भी ५ स्वास्तिक बनावें और मोली डालकर बालक को वस्त्र पर पहनावें। माता, पिता व बुआ या बहिन आदि भी स्नान कर नये वस्त्र धारण कर पूजा की थाली में केसर, चन्दन, कुंमकुंम, मोली अक्षत, श्रीफल, लापसी प्रसाद आदि के साथ मंदिर में प्रवेश समय प्रत्येक पागोतिये पर एक-एक श्रीफल चढाते चढाते मंदिर में प्रवेश करें ।

४ श्री बडवासन जी का पूजन कर प्रसाद, श्रीफल चढाकर बालक को श्री बड़माताजी के शरणागत करें ।

५ एक-एक श्रीफल देवताओं को व भेरुजी को भी चढावें ।

६ चिटक व प्रसाद आपस में ही बांटे इसका ध्यान रखें ।

७ मुण्डन संस्कार के रु. १०१/-(ज्यादा अपनी श्रध्दानुसार) श्री बडमाताजी के भण्डार में डालें या मैनेजर के पास जमा कर रसीद प्राप्त करें। रसीद प्राप्त करना आवश्यक है। इससे रिकार्ड भी रहता है।